८. पूर्ण विश्राम

– सत्यकाम विद्यालंकार

डॉक्टर ने बाँह पर काला कपड़ा लपेटा और रबड़ की थैली से हवा फूँककर नाड़ी की गति देखी फिर बोला, ''कुछ सीरियस नहीं है, दफ्तर से छुट्टी लेकर बाहर हो आइए; विश्राम आपको पूर्ण निरोग कर देगा। लेकिन, विश्राम भी पूर्ण होना चाहिए'' तो पत्नी बड़ी प्रसन्न हुई।

घर जाकर श्रीमती जी से कह दिया : ''जुहू की तैयारी कर लो, हम दो दिन पूर्ण विश्राम करेंगे।''

एक दिन बाद पूर्णिमा भी थी। चाँदनी रात का मजा जूहू पर ही है। एक दिन पहले आधी रात से ही उन्होंने तैयारी शुरू कर दी। दो बजे का अलार्म बेल लग गया। स्वयं वह दो से पहले ही उठ बैठी और कुछ नोट करने लगी।

श्रीमती जी ने इन सब कामों की सूची बनाकर मेरे हाथ में दी।

गैरेज में पहुँचकर श्रीमती जी ने मोटर में हवा भरने की पिचकारी, ट्यूब वाल, रबड़ सोल्यूशन, एक गैलन इंजिन आयल आदि-आदि चीजें और भी लिखी थीं। दिन भर दौड़-धूप करके पायधुनी से मिस्त्री लाया। सुबह से शाम हो गई मगर शाम तक चार में से दो खिड़कियों की चटखनियाँ भी नहीं कसी गईं। मोटर के लिए जरूरी सामान लाते-लाते रात तक दिल की धड़कन दुगुनी हो गई थी।

रात को सोने लगे तो श्रीमती जी ने आश्वासन देते हुए कहा : ''कल जुहू पर दिन भर विश्राम लेंगे तो थकावट दूर हो जाएगी।''

श्रीमती जी ने अपने करकमलों से घड़ी की घुंडी घुमाकर अलार्म लगा दिया और खुद बाहर जाकर मोटर का पूरा मुआयना करके यह तसल्ली कर ली कि सूची में लिखा सब सामान आ गया या नहीं। सुबह पाँच बजते ही अलार्म ने शोर मचाया।

रोशनी होते न होते जुहू की तैयारी चरम सीमा पर पहुँच गई। स्टोव को भी आज ही धोखा देना था। वह हर मिनट बुझने लगा। आधा घंटा उसमें तेल भरने, धौंकनी करने में चला गया। आखिर चाय का प्रोग्राम स्थगित कर दिया गया और हम दत्तचित्त हो तैयारी में जुट गए। वाटरलू जाने से पहले नेपोलियन ने भी ऐसी तैयारी न की होगी।

ऐसी महत योजनाओं के संपन्न करने में हम पति-पत्नी परस्पर सहयोग भावना से काम करने पर विश्वास रखते हैं। सहयोग भावना

परिचय

जन्म : १९३५, लाहौर (अविभाजित भारत)

परिचय : आप सफल संपादक, लेखक और कवि हैं। सरल-सुबोध भाषा और रोचक बोधगम्य शैली आपके लेखन की विशेषताएँ हैं। लेखन व्यावहारिक है। आपने व्यक्तित्व और चरित्र निर्माण पर अधिक बल दिया है।

प्रमुख कृतियाँ : 'स्वतंत्रतापूर्व चरित्र निर्माण', 'मानसिक शक्ति के चमत्कार', 'सफल जीवन' (लेखसंग्रह), 'वीर सावरकर', 'वीर शिवाजी', 'सरदार पटेल', 'महात्मा गांधी' (जीवन चरित्र) आदि।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत हास्य-व्यंग्य कहानी के माध्यम से कहानीकार ने यह समझाने का प्रयास किया है कि जीवन की आपा-धापी में विश्राम के पल मुश्किल से ही मिलते हैं। जब कभी ऐसे अवसर मिलते भी हैं तो घरेलू उलझनों के कारण हम उन पलों का आनंद नहीं उठा पाते।

हमारे जीवन का मूलमंत्र है । सहयोग, मन, वचन, कर्म इन तीनों से होता है । जीवन का यह मूलमंत्र, मुझे भूला न था । श्रीमती जी मुझे मेरे कामों की याद दिलाने लगीं और मैं उनके उपकार के बदले उनकी चिंताओं में हाथ बँटाने लगा । मैंने याद दिलाया–''पूड़ियों के साथ मिर्ची का अचार जरूर रख लेना ।''

श्रीमती जी बोली, ''अचार तो रख लूँगी पर तुम भी समाचार पत्र रखना न भूल जाना, मैंने अभी पढ़ा नहीं है ।'' मैं बोला : ''वह तो मैं रख लूँगा ही लेकिन तुम वह गुलबंद न भूल जाना जो हम पिछले साल कश्मीर से लाए थे । जुहू पर बड़ी सर्द हवा चलती है ।''

''गुलबंद तो रख लूँगी लेकिन तुम कहीं बेदिंग सूट रखना न भूल जाना, नहीं तो नहाना धरा रह जाएगा ।''

''और, तुम कहीं रबर कैप भूल गई तो गजब हो जाएगा ।''

''वह तो रख लूँगी लेकिन कुछ नोट पेपर, लिफाफे भी रख लेना । और देखो राइटिंग पैड भी न भूल जाना ।''

''राइटिंग पैड का क्या करोगी ?''

''कई दिन से माँ की चिट्ठी आई पड़ी है । जुहू पर खाली बैठे जवाब भी दे दूँगी । यों तो वक्त भी नहीं मिलता ।''

''और जरा वे चिट्ठियाँ भी रख लेना, जिनके जवाब देने हैं, चिट्ठियाँ ही रह गईं तो जवाब किसके दोगे ?''

''और सुनो, बिजली के बिल और बीमा के नोटिस आ पड़े हैं उनका भी भुगतान करना है, उन्हें भी डाल लेना ।''

''उस दिन तुम धूप का चश्मा भूल गए तो सर का दर्द चढ़ गया इसलिए कहती हूँ छतरी भी रख लेना ।''

''अच्छा बाबा रख लूँगा और देखा, धूप से बचने की क्रीम भी रख लेना । शाम तक छाले न पड़ जाएँ । वहाँ बहुत करारी धूप पड़ती है ।''

श्रीमती जी कहती तो जा रही थीं कि रख लूँगी, रख लूँगी, लेकिन ढूँढ़ रही थीं नेलकटर । कैंची, ब्रश और सब तो मिल गया था लेकिन नेलकटर नहीं मिल रहा था इसलिए बहुत घबराई हुई थीं ।

मैंने कहा: ''जाने दो नेलकटर, बाकी सब चीजें तो रख लो ।''

इधर मैं अपने लिए नया अखबार और कुछ ऐसी किताबें थैले में भर रहा था जो बहुत दिनों से समालोचना के लिए आई थीं और सोचता था कि फुरसत से समालोचना कर दूँगा । आखिर तीन किताबें थैले में झोंक लीं । कई दिनों से कविता करने की भी धुन सवार हुई थी । उनकी कई कतरनें इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं । उन्हें भी जमा किया । सोचा, काव्य प्रेरणा के लिए जुहू से अच्छी जगह और कौन-सी मिलेगी ?

मौलिक सृजन

पर्यटन स्थलों पर सैर करने के लिए जाते समय बरती जाने वाली सावधानियों की सूची बनाओ ।

श्रवणीय

दूरदर्शन, रेडियो, यू-ट्यूब पर हास्य कविता सुनो और सुनाओ ।

आखिर कई अटैची, कई थैले, कई झोले भरकर हम जुहू पहुँचे । पाँच-सात मिनट तो हम स्वप्नलोक में विचरते रहे ।

हम समुद्र में नहाने को चल पड़े । समुद्र तट पर और लोग भी नहा रहे थे । एक ऊँची लहर ने आकर हम दोनों को ढँक लिया । लहर की उस थपेड़ से न जाने श्रीमती जी के मस्तिष्क में क्या नई स्फूर्ति आ गई कि उन्होंने मुझसे पूछा : ''तुम्हें याद है बरामदे की खिड़की को तुमने अंदर से बंद कर दिया था या नहीं ?''

मैं कह उठा, ''मुझे तो कुछ याद नहीं पड़ता ।''

''अगर वह बंद नहीं हुई और खुली ही रह गई तो क्या होगा ?'' कहते-कहते श्रीमती जी के चेहरे का रंग पीला पड़ गया ।

मैंने कहा ''चलो छोड़ो अब इन चिंताओं को, जो होना होगा हो जाएगा ।''मेरी बात से तो उनकी आँखों में आँसुओं का समुद्र ही बह पड़ा । उनके काँपते ओठों पर यही शब्द थे ''अब क्या होगा ?''

''और अगर खिड़कियाँ खुली रह गई होंगी तो घर का क्या होगा ?'' यह सोच उनकी अधीरता और भी ज्यादा होती जा रही थी । जिस धड़कन का इलाज करने को जुहू पर आया था वह दस गुना बढ़ गई थी । मैंने तेजी से मोटर चलाई । मोटर का इंजिन धक-धक कर रहा था लेकिन मेरा दिल उससे भी ज्यादा तेज रफ्तार से धड़क रहा था । जिस रफ्तार से हम गए थे, दूनी रफ्तार से वापस आए । अंदर आकर देखा कि खिड़की की चटखनी बदस्तूर लगी थी, सब ठीक-ठाक था । मैंने ही वह लगाई थी, लेकिन लगाकर यह भूल गया था कि लगाई या नहीं और इसका नतीजा यह हुआ कि पहले तो मेरे ही दिल की धड़कन बढ़ी थी, अब श्रीमती जी के दिल की धड़कन भी बढ़ गई । मुझे याद आ रहे थे 'पूर्ण विश्राम' और 'पूर्ण निरोग', साथ ही यह विश्वास भी पक्का हो गया था कि जिस शब्द के साथ 'पूर्ण' लग जाता है, वह 'पूर्ण भयावह' हो जाता है ।

—o—

पठनीय

प्रेमचंद की कोई कहानी पढ़ो और उसका आशय, अपने शब्दों में व्यक्त करो ।

लेखनीय

'सड़क सुरक्षा सप्ताह' के अवसर पर यातायात के नियमों के बैनर्स बनाकर विद्यालय की दीवारों पर लगाओ ।

संभाषणीय

किसी दुकानदार और ग्राहक के बीच का संवाद प्रस्तुत करो ।

शब्द वाटिका

धौंकनी करना = हवा भरना
झल्लाना = बहुत बिगड़ जाना, झुँझलाना

मुहावरे

आँखों से ओझल होना = गायब हो जाना
हाथ बँटाना = सहायता करना
चेहरे का रंग पीला पड़ना = घबरा जाना
धुन सवार होना = लगन होना

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–

(१) संजाल पूर्ण करो :

गैरेज की सूची में लिखी हुई चीजें

(२) प्रवाह तालिका पूर्ण करो :

जुहू जाते वक्त साथ में ली गई वस्तुएँ

(३) लिखो :

पर्यायवाची शब्द :

ऐनक	रात	अखबार	घर
..........,........	..........,........,........	..........,........	..........,........,........

भाषा बिंदु निम्नलिखित समोच्चारित भिन्नार्थक हिंदी शब्दों के अर्थ लिखो तथा उन शब्दों का अलग–अलग पूर्ण वाक्यों में प्रयोग करो : हार, वार, हल, सीना, ज्वार, सुमन

उपयोजित लेखन कोई साप्ताहिक पत्रिका अनियमित रूप में प्राप्त होने के विरोध में शिकायत करते हुए संपादक को निम्न प्रारूप में पत्र लिखो :

पत्र का प्रारूप
(औपचारिक पत्र)

दिनांक :
प्रति,
....
....
विषय :.............
संदर्भ : ....
महोदय,
विषय विवेचन ....

भवदीय/भवदीया,
....
नाम : ....
पता : ....
....
ई–मेल आईडी : ....

IYFTHF

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन प्राचीन काल से आज तक प्रचलित संदेश वहन के साधनों की सचित्र सूची तैयार करो ।